॥ ओ३म्॥

शिक्षा संस्कारः अभ्युदयः निश्रेयसः

आचार्यकुलम्

दिवस आवासीय शिक्षण संस्थान, राँची

(पतंजलि योगपीठ (ट्रस्ट), हरिद्वार -249405 के तत्वावधान में)

Acharyakulam

(Co-ed) Day boarding Institution, Ranchi

Building under construction

आचार्यकुलम्, टाटा रोड, लॉ कॉलेज के नजदीक
नामकुम, राँची – 834010, झारखण्ड

admission@acharyakulam.org : website : www. acharyakulam.org

सिटी ऑफिस

पतंजलि योगपीठ, स्टेशन रोड, सिरम टोली चौक, राँची – 834001
फोन : 0651-2462644, 7302315063

---------- : प्रवेश-पत्र मिलने का स्थान :----------

पतंजलि अरोग्य केन्द्र	पतंजलि अरोग्य केन्द्र	पतंजलि अरोग्य केन्द्र	पतंजलि चिकित्सालय	पतंजलि चिकित्सालय
ए.के. स्टोर, ग्रीन पार्क	पिस्का मोड़, रातू रोड	यू.को. बैंक के पीछे, हीनू	ओल्ड एच.बी. रोड, पटेल चौक,	होम्बई गेतलातू
शॉप नं. 103 बरियातु रोड	जनता पेट्रोल पम्प के सामने	ब्रांच, किलबर्न कॉलोनी	महिन्द्रा शो-रूम के नजदीक,	बी.आई.टी. मोड़ के नजदीक
राँची, मो. : 9955998309	राँची, मो. : 9955998320	राँची, मो. : 9955998335	राँची, मो. : 9471500065	राँची, मो. : 7004173348

फार्म मिलने की अंतिम तारीख : 31 जनवरी 2019 | प्रवेश संवाद 15 फरवरी 2019, 10:00 बजे से

Like us on www.facebook.com/acharyakulam | Follow us on www.twitter.com/acharyakulam

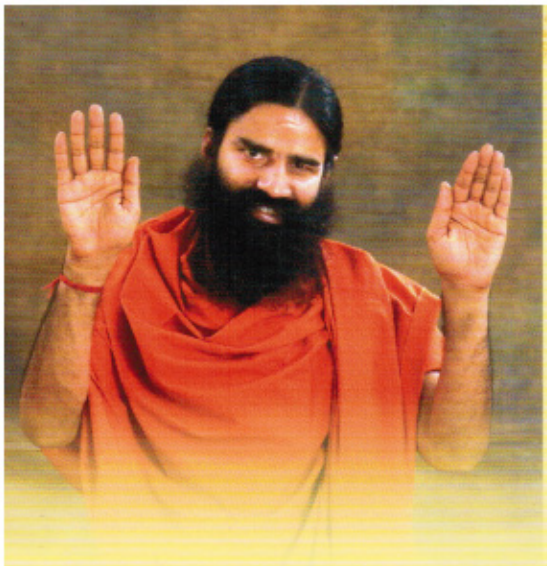

शुभकाएनाएँ

।। सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा ।।

भारत सृष्टि के आदिकाल से ही ज्ञान – विज्ञान, संगीत, कला व संस्कृति के क्षेत्रों में विश्व में अग्रणी रहा है।

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं-स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥ – मनु0 2/20

विश्व के सभी देश भारत में आकर ज्ञान-विज्ञान की दीक्षा लिया करते थे तथा भारत को अपने आध्यात्मिक गुरु व मार्गदर्शक के रूप में स्वीकार करते थे। अठारहवीं शताब्दी तक भारत शैक्षणिक, आर्थिक, सामाजिक व आध्यात्मिक दृष्टि से विश्व के आदर्श देशों की श्रेणी में रहा है। अठारहवीं शताब्दी में विश्व बाजार में हमारी 33 प्रतिशत सहभागिता थी तथा विश्व की कुल आय में हमारी सहभागिता 27 प्रतिशत थी। देश में साक्षरता की दर 97 प्रतिशत थी। प्रसिद्ध जर्मन विद्वान मैक्समूलर, अंग्रेज विद्वान जी.डब्ल्यू. लाइटनेर एवं तात्कालिक ब्रिटिश सरकार के दस्तावेजों के अनुसार प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के लगभग 7 लाख 32 हजार गुरुकुल थे। इसके साथ-साथ 14 हजार से अधिक उच्च शिक्षा के केन्द्र थे, जिनमें गणित, नक्षत्र विज्ञान, नक्षत्र भौतिकी, भौतिकी, रसायन, भूगर्भ विज्ञान, धातु विज्ञान, दर्शन शास्त्र, शल्य चिकित्सा व चिकित्सा विज्ञान से लेकर विज्ञान, तकनीकी व प्रबन्धन आदि से संबंधित कम से कम 18 विषय पढ़ाये जाते थे। अंग्रेजों ने भारत को सदियों तक गुलाम बनाने के षड्यंत्र के तहत हमारी सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था को नष्ट कर हमारी समृद्ध व गौरवशाली ज्ञानपरम्परा को खण्डित करने का घृणित प्रयास किया।

देश में हमारे पास लगभग 450 विश्वविद्यालय, 13 लाख प्राथमिक व माध्यमिक विद्यालय तथा लगभग 15 हजार महाविद्यालय हैं। विज्ञान, प्रबंधन व तकनीकी की शिक्षा देने वाले अनेक विश्व प्रसिद्ध शिक्षण संस्थान हैं, परन्तु फिर भी हम अपने शिक्षा संस्थानों में अपने संस्कारों व संस्कृति को पूरी तरह समाविष्ट नहीं कर पा रहे हैं। हम पतंजलि विश्वविद्यालय तथा आचार्यकुलम् के माध्यम से उन्नत शिक्षा के साथ-साथ वेद-वेदांग, भारतीय संस्कृति, संस्कार, इतिहास, योग, ध्यान, संयम व सदाचार को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाना चाहते हैं। हम शिक्षा का भारतीयकरण या स्वदेशीकरण करना चाहते हैं। हम बच्चों में छिपे महामानव को जागृत कर शिक्षा और संस्कारों से उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास कर, उन्हें दुनिया का सफलतम, श्रेष्ठ, पूर्ण जागृत और पूर्ण समर्थ पुरुषार्थी इंसान बनाना चाहते हैं।

हमारे संस्थान के स्नातक गुरु-आश्रम से जाकर किसी अन्य की दया के पात्र या आश्रित होकर रोजगार की तलाश में न भटकें, अपितु वे स्वयं रोजगार सृजित करके अन्यों को स्वास्थ्य, स्वावलम्बन व रोजगार दें, ऐसी श्रेष्ठ वैदिक ऋषि संस्कृति की गुरुकुलीय परम्परा की प्रतिस्थापना का एक उच्च आदर्श पतंजलि विश्वविद्यालय तथा आचार्यकुलम् के माध्यम से प्रस्तुत करना चाहते हैं।

आचार्यकुलम् के विद्यार्थी चाहे हमारे पतंजलि विश्वविद्यालय में या दुनिया के किसी भी विश्वविद्यालय में जायें, हम उनको संस्कारों का ऐसा आधार देना चाहते हैं, जिससे वे पश्चिमी दुनिया के भौतिक वासनात्मक प्रभाव से प्रभावित न हो, अपितु युग के प्रवाह को बदलने में समर्थ हो सकें, हम ऐसे पूर्ण सक्षम एवं पूर्ण जागृत विवेकशील मानवीय गुणों से सम्पन्न विद्यार्थी आचार्यकुलम् में तैयार करना चाहते हैं।

स्वामी रामदेव

परिचय

परम पूज्य योगऋषि स्वामी रामदेव जी और श्रद्धेय आचार्य बालकृष्ण जी के दिव्य आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन स्वरूप, मूल्य आधारित शिक्षा के अभिनव संकल्पना के क्रियान्वय हेतु आचार्यकुलम् राँची का उद्घाटन शीघ्र ही होने जा रहा है, शैक्षणिक सत्र 2019-20 से यह विद्यालय कक्षा LKG से कक्षा V तक प्रारम्भ किया जायेगा और प्रत्येक वर्ष एक कक्षा upgrade करते हुए +2 तक होगा। भारतवर्ष के प्राचीन ऋषि-मुनियों द्वारा स्थापित वैदिक गुरुकुलों की सनातन आर्ष ज्ञान परंपरा एवं वर्तमान युग के आधुनिक विज्ञान, तकनीकी एवं व्यावसायिक शैक्षणिक पद्धति का दिव्य संगम है –

"आचार्यकुलम्"।

आचार्यकुलम् का दर्शन

हमारा मिशन :

पूर्ण जागृत व पूर्ण समर्थ आत्माएँ तैयार करना और इससे फिर पूर्ण जागृत, प्रकाशित, विकसित तथा शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व वैज्ञानिक रूप से समर्थ परिवार, समाज, राष्ट्र व विश्व का निर्माण करना।

भविष्य की अपेक्षा आचार्यकुलम् से :-

1. **वैदिक विद्वान निर्माण योजना** – व्याकरण, दर्शन, उपनिषद्, वेद, वैदिक साहित्य, भारतीय प्रामाणिक इतिहास एवं राजधर्म आदि विषयों के सन्दर्भ में प्रामाणिक विद्वान् तैयार हों तथा सामाजिक, आध्यात्मिक, आर्थिक, वैज्ञानिक व राजनैतिक दृष्टि से एक आदर्श नेतृत्व देने की क्षमता रखने वाले दिव्य व्यक्तित्व का विद्यार्थी तैयार करना।
2. **आधुनिक भारत का राष्ट्रीय नेतृत्व निर्माण योजना** – विभिन्न क्षेत्रों जैसे – तकनीकी, प्रबंधन, रक्षा सेवा, प्रशासनिक सेवा, पुलिस सेवा, चिकित्सा, अभियान्त्रिकी, खेलकूद, कला, संगीत, नाट्य, कृषि, शिल्प व शोध से लेकर उद्योग आदि विविध क्षेत्रों में नये कीर्तिमान स्थापित करने हेतु बौद्धिक व राष्ट्रीय दिव्य नेतृत्व तैयार करना।

आचार्यकुलम् परिवार के सदस्यों से अपेक्षित आचरण :

1. **ज्ञान पक्ष :** बचपन से ही बच्चों का बौद्धिक विकास हमारा मूल लक्ष्य है।
2. **आचरण पक्ष :** स्थूल दोषों से विद्यार्थी 100 प्रतिशत मुक्त रहे तथा सूक्ष्म दोषों को अनुभव करके पूरी ईमानदारी से उनको दूर करने के लिए संकल्पित रहें और हम गर्व से कह सकें, "हमारे पूर्वज कैसे थे ? आचार्यकुलम् के विद्यार्थियों जैसे थे।"

एक आदर्श ईश्वर पुत्र, ऋषि-ऋषिकाओं एवं वीर-वीरांगनाओं की सन्तान तथा भारत माता या धरती माता की श्रेष्ठ सन्तानों को जैसा आचरण रखना चाहिए वैसा ही आचरण हमारे आचार्यों, विद्यार्थियों व स्नातकों का हो। अशुभ आचरण के प्रति प्रतिपक्ष भावना अत्यन्त सबल होनी चाहिए।

जैसी भावना हमारी माँसाहार, दुराचार, हिंसा व दुर्व्यसनों के प्रति होती है वैसी ही भावना जीवन के सूक्ष्म दोषों- वासना, निराशा, आवेग, आग्रह एवं प्रतिक्रिया आदि के प्रति निर्मित हो। अशुभ का हम स्वागत न करें। यह सत्य है कि अनादि काल से हमारे साथ जुड़ा कर्माशय, संस्कार, इस जन्म का स्वभाव व प्रवृत्ति दोष हमारे सामने सबसे बड़ी चुनौती या बाधा बनकर बीच में आयेगा। लेकिन दृढ़ संकल्प व उत्साह के साथ विवेक पूर्वक योग, साधना व अन्य उपायों से हम इस समस्या से भी बाहर निकलकर अपने अशुभ संस्कारों को दग्धबीज या निर्बीज कर लेंगे।

सुविधाएँ

1. बालक एवं बालिकाओं के लिए अलग-अलग विश्वस्तरीय एयर कूल्ड आवासीय और शैक्षणिक ब्लॉक।
2. अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त शिक्षणकक्ष (स्मार्ट कलास) व प्रयोगशालाएँ।
3. बालक एवं बालिकाओं के लिए अलग-अलग उच्च संसाधन युक्त पुस्तकालय।
4. आधुनिकतम खेल सुविधाएँ : कुश्ती, कब्ड्डी, धनुर्विद्या, चोकबॉल खो-खो, एथलेटिक्स, फुटबॉल, वॉलीबॉल, हैंडबॉल, बास्केटबॉल, बैडमिन्टन, टेबल-टेनिस, कराटे और मार्शल आर्ट् आदि के राष्ट्रीय स्तर के प्रशिक्षक।

शुभकाएनाएँ

बच्चे किसी भी देश का भविष्य होते हैं तथा माता-पिता की आशाओं और सपनों के केन्द्र होते हैं। हर एक माता-पिता अपने बच्चों को दुनिया में सबसे ऊँचाई पर देखना चाहते हैं। माता-पिता बच्चों को दुनिया की सबसे श्रेष्ठ शिक्षा देने के साथ-साथ उनको श्रेष्ठतम संस्कार भी देना चाहते हैं। भारत की सनातन आर्ष शिक्षा परम्परा में शिक्षा एवं संस्कारों का श्रेष्ठतम दिव्य समन्वय था। उसी सनातन आर्ष ज्ञान परम्परा एवं आधुनिक शिक्षा व्यवस्था का संगम है -'आचार्यकुलम्'। आचार्यकुलम् में हम एक ओर जहाँ आधुनिकतम शिक्षा देंगे, वहीं दूसरी ओर संस्कारों के द्वारा उनमें श्रेष्ठतम नेतृत्व भी पैदा करेंगे।

पहले भारत का नेतृत्व गुरुकुलों में तैयार होता था, जहाँ पर विद्यार्थी वेद-वेदांगों के साथ-साथ शस्त्रविद्या, नीतिशास्त्र व अर्थशास्त्र का भी अध्ययन करके सही और गलत की विवेचना करने की क्षमता प्राप्त कर लेते थे। तब व्यक्ति, परिवार, समाज व राष्ट्र में सत्य-संयमी, सदाचारी व्यक्तियों का सर्वोपरि स्थान होता था। दुर्भाग्य से आज देश का नेतृत्व कॉन्वेंट स्कूलों एवं ऑक्सफोर्ड, कैंब्रिज, हार्वर्ड, मैसाचुसेट्स आदि विदेशी शिक्षा संस्थानों में तैयार हो रहा है। सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, आर्थिक, व्यवसायिक, राजनैतिक, वैज्ञानिक व बौद्धिक नेतृत्व हमें आचार्यकुलम् एवं अन्य ज्ञानानुष्ठानों से तैयार करना है। दुर्भाग्य से आज विशेषज्ञों, नेतृत्व कर्ताओं और बुद्धिजीवियों में आध्यात्मिकता, भारतीयता व स्वाभिमान का भाव व संस्कार अत्यन्त क्षीण या मृतप्राय हो गए है। हम सभी क्षेत्रों में भारतीयता, आध्यात्मिकता व स्वाभिमान युक्त नेतृत्व तैयार करेंगे जिसमें आधुनिकता व भारतीयता का समग्र समावेश होगा।

आचार्यकुलम् देश के लिए श्रेष्ठतम, पूर्ण जागृत नागरिक तैयार करने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायेगा।

सभी विद्यार्थियों व अभिभावकों को मंगलमय जीवन की अनन्त शुभकामनायें !

आचार्य बालकृष्ण

- आचार्य बालकृष्ण

मुख्य विशेषताएँ

1. पृथक् प्रकार की शिक्षा व्यवस्था के अन्वेषक के रूप में आचार्यकुलम् में सनातन श्रुति परंपरा के साथ-साथ अत्याधुनिक विधाओं व उपकरणों से सुसज्जित परिसर में सी.बी.एस.ई. पाठ्यक्रम का समन्वय किया गया है।
2. परम्परागत वैदिक गुरुकुलीय पद्धति के अनुरूप छात्र एक ओर जहाँ संस्कृत, संस्कृत सम्भाषण, वेद-वेदांग, उपनिषद्, दर्शन इत्यादि में दक्षता प्राप्त करते हैं, वहीं दूसरी ओर वे आधुनिक शिक्षा पद्धति के अनुरूप अंग्रेजी भाषा, अंग्रेजी सम्भाषण, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला एवं शिल्प व खेलों में भी निपुण होते हैं। छात्रों में वैदिक सभ्यता, संस्कार एवं मानवीय मूल्यों को अंतर्निविष्ट करना ही "आचार्यकुलम्" की अवधारणा का केन्द्र बिन्दु है।
3. बहुआयामी व समग्र व्यक्तित्व का निर्माण करना ही शिक्षा का उद्देश्य है। शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, बौद्धिक व आध्यात्मिक रूप से छात्रों का सर्वांगीण विकास ही आचार्यकुलम् का लक्ष्य है तथा आचार्यकुलम् परिवार द्वारा प्रतिदिन किये जाने वाले योग व प्रातः कालीन यज्ञ की इस उद्देश्य की प्राप्ति में महत्त्वपूर्ण भूमिका रहेगी।
4. परम्परागत वैदिक गुरुकुलीय पद्धति के अनुरूप शिक्षा प्रारम्भ होने से पूर्व सभी छात्र-छात्राओं का वैदिक विधि-विधान से "उपनयन संस्कार" किया जाता है।
5. आचार्यकुलम् पूर्व और पश्चिम की श्रेष्ठतम शैक्षणिक पद्धतियों का संगम है।
6. आध्यात्मिकता तथा चरित्र निर्माण पर विशेष बल देते हुए आचार्यकुलम् को भावी सामाजिक और राष्ट्रीय नेतृत्व की दिव्य निर्माणशाला के रूप में स्थापित किया गया है।
7. भारतमाता तथा प्रकृति के प्रति आदर तथा प्रेम अंतर्निविष्ट करने के लिए छात्रों को योग, आयुर्वेद पर आधारित स्वदेशी जीवन पद्धति एवं पूर्ण सात्विक व पौष्टिक आहार लेने के लिये प्रेरित किया जाता है।
8. छात्रों का समय-समय पर विश्व के महान् शिक्षाविदों व गुरुओं द्वारा मार्गदर्शन किया जाता है।
9. संस्थान सदैव अभिनव तथा रचनात्मक क्रियाकलापों को बढ़ावा देता है।
   - सी.बी.एस.सी. पाठ्यक्रम (अंग्रेजी माध्यम) व वैदिक पाठ्यक्रम (संस्कृत माध्यम) का समावेश।
   - पेशेवर हाउस कीपिंग कंपनी द्वारा स्वच्छ और साफ-सुथरा परिसर।
   - 24X7 विद्युत बैकअप व आर.ओ. शोधित पेयजल।
   - 24X7 चिकित्सका की व्यवस्था।
   - बालकों व बालिकाओं हेतु अलग-अलग शिक्षण कक्ष।
   - स्मार्टक्लास-बोर्ड से सुसज्जित कक्षाएँ।
   - सुसज्जित चित्रकला व संगीत कक्ष।
   - एयरकूल्ड कक्षाएँ।
   - प्रतिदिन योगाभ्यास एवं वैदिक हवन।
   - शाम को शुद्ध शाकाहारी व सात्विक अल्पाहार की व्यवस्था।
   - प्रशिक्षित व अनुभवी आचार्यगण।
   - अत्याधुनिक विज्ञान, कम्प्यूटर एवं अंग्रेजी भाषा की प्रयोगशालाएँ।
   - 24X7 सुरक्षा गार्ड्स व सी.सी.टी.वी. से आच्छादित परिसर।
   - सुधारात्मक वर्ग कक्षाएँ नियमित कक्षाओं के बाद।
   - अल्ट्रा आधुनिक उन्नत तकनीक से लैस प्रयोगशालाएँ।
   - **परिवहन सुविधा उपलब्ध।**

आचार्यगण

आचार्यकुलम् में अध्यापकों की गुणवत्ता पर विशेष बल दिया जाता है। प्रशिक्षित, उच्च शिक्षा प्राप्त तथा अनुभवी शिक्षकों को शिक्षण कार्य हेतु नियुक्त किया जाता है। दयाभाव, कर्त्तव्य के प्रति समर्पण, शिष्टाचार सहायभाव तथा आध्यात्मिकता में गहन निष्ठा-भाव की पूर्णापेक्षा आचार्यकुलम् के अध्यापकों से की जाती है।

अध्यापकों के कौशल का विकास यहाँ एक सतत् प्रक्रिया है और अध्यापक विद्यार्थियों को अतिआवश्यक शैक्षिक तथा भावात्मक सहयोग प्रदान करें, उनसे ऐसी अपेक्षा है, ताकि वे घर जैसा महसूस कर सकें।

बच्चों के आधुनिकतम ज्ञान एवं सुसंस्कारों के साथ-साथ वैदिक परम्परा के अनुरूप उन्हें पुष्पित-पल्लवित करने हेतु भगवान बिरसा मुण्डा की तपोभूमि पर परमपूज्य तपोमूर्ति, योगऋषि स्वामी रामदेव जी महाराज एवं श्रद्धेय आयुर्वेदाचार्य बालकृष्ण जी महाराज के निर्देशन में 'आचार्यकुलम्' का शुभारम्भ किया जा रहा है। बच्चों के उज्ज्वल भविष्य एवं उन्नत भारत के निर्माण के लिए आप उन्हें प्रेरित करें।

एल. आर. सैनी
निदेशक

4154/18 • kailashpaper.org • 9263180313/14/15

ADMISSION FOR THE SESSION 2019-20

Class : Admission is open for class - LKG to Std V & every year one class will be added upto +2

Eligibility : 3½-4½+yrs for LKG, 4½-5½+yrs for UKG, 5½-6½+yrs for Std I, 6½-7½+yrs for Std II, 7½-8½+yrs for Std III, 8½-9½+yrs for Std IV & 9½-10½yrs for Std V.

Contact No : +91 651-2462644, 9471500065, 9931102522